RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्षः 74, अंक : 51 एक प्रति 2 : रुपये
रविवार 11 मार्च, 2018
विक्रमी सम्वत् 2074, सृष्टि सम्वत् 1960853118
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये
आजीवन शुल्क : 1000 रुपये

दूरभाष : 0181-2292926, 5062726
E-mail: apspunjab2010@gmail.com,
www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष–74, अंक : 51, 8-11 मार्च 2018 तदनुसार 28 फाल्गुन सम्वत् 2074 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

महान् ने महान् जहान बनाया

ले०-स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

यः पुष्पिणीश्च प्रस्वश्च धर्मणाऽधि दाने व्यवनीरधारयः।
यश्चासमा अजनो दिद्युतो दिव उरुरूर्वां अभितः सास्युक्थ्यः।।
-ऋ. २।१३।७

शब्दार्थ–**यः** = जिसने **धर्मणा** = अपनी धारकशक्ति से **पुष्पिणीः** = फूलवाली **च** = तथा **प्रस्वः** = उत्तम फलोंवाली **च** = भी **अवनीः** = भूमियाँ **दाने** = देने के निमित्त **अधि+वि+अधारयः** = अधिकारपूर्वक विशेषरूप से बनाई हैं **च** = भी **यः** = जिस **उरुः** = महान् ने **दिवः** = द्यौः, आदिम प्रकाशमय पिण्ड, हिरण्यगर्भ से **असमाः** = विषम, अनुपम **विद्युतः** = चमकने वाले **ऊर्वान्** = महान्–से–महान् जहानों को **अभितः** = सब ओर **अजनः** = बनाया है, **सः** = ऐसा तू **उक्थ्यः** = प्रशंसनीय **असि** = है।

व्याख्या–प्रश्न होता है–किसी की स्तुति–प्रार्थना–उपासना क्यों करें? सबके मन में उठने वाले इस प्रश्न का इस मन्त्र में समाधान–सा है। संसार में कार्यकारण का अबाध्य नियम कार्य करता दीख रहा है। छोटी–सी सूई को भी कर्त्ता के बिना बना हुआ मानने को कोई तैयार नहीं होता, किन्तु इस संसार के लिए उसे किसी कर्त्ता की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती। वेद अपनी भावुक, मोहक शैली से समझाता हुआ कहता है–देख, भोले मनुष्य! देख! सावधानता से देख! इस रङ्ग–बिरङ्गी भूमि को देख! कहीं बेल–बूटे हैं। कहीं फूलों की क्यारियाँ लगी हैं, कहीं फलदार वृक्ष झूम रहे हैं। इन सबको किसने बनाया? खेत में किसान ने लगाया, किन्तु वन में किसने सजाया? किसान ने भी वन देखकर ही खेत बनाया था। फिर देख, इस भूमि को भी तो कोई धारण कर रहा है। वन, पर्वत सभी भूमि पर हैं, किन्तु भूमि किस पर है? भूमि को कौन धार रहा है?

अच्छा और देख, आकाश की ओर दृष्टि डाल। ये जो झिलमिल करते तारे–सितारे, ग्रह–नक्षत्र दीख रहे हैं, इन्हें किसने उत्पन्न किया? कोई बड़ा है, कोई छोटा है। ज्योतिषी बतलाते हैं, ये झिलमिल करने वाले तारे इतने छोटे नहीं हैं जितने दीखते हैं। इनमें कोई–कोई तो इतना बड़ा है जिसमें पचास लाख सूर्य समा जाएँ। सूर्य भी छोटा नहीं है। वही खोजी कहते हैं, हमारी इस विशाल ससागरा धरा–जैसी तेरह लाख भूमियाँ सूर्य में समा सकती हैं। अरे! इतने विशाल तेजः पुञ्जों को किसने उत्पन्न किया? जिसने इतने महान् दीप्तिमान् पिण्ड बनाये, वह अवश्य महान् है। कारण–कार्य के नियम का अपलाप नहीं किया जा सकता। कर्त्ता के बिना संसार में कोई वस्तु बनती नहीं तो इतने महान् पदार्थों का बनाने वाला अवश्य होना चाहिए। इतने महान् पदार्थों को बनाने तथा पालने के लिए अवश्य महती शक्ति चाहिए, अतः शक्ति की कामना वाले उसकी पूजा करें, अर्चा करें। वेद कहता है–**'सास्युक्थ्य'** = वही तू पूज्य है। उसने सभी ओर रचना की है, अर्थात् सभी ओर वह है। जिधर चाहो उधर ही उसे पाओ। **(स्वाध्याय संदोह से साभार)**

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्य छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।
-ऋ० १०.१२१.२

भावार्थ– वह पूर्ण परमात्मा अपने भक्तों को अपना ज्ञान और सब प्रकार का बल प्रदान करता है। सब विद्वान् लोग जिसकी सदा उपासना करते हैं और जिसकी वैदिक आज्ञा को ही शिरोधार्य मानते हैं, जिसकी उपासना करना मुक्तिदायक है, जिसकी भक्ति न करना वारंवार संसार में, अनेक जन्म मरणादि कष्टों का देने वाला है। इसलिए ऐसे प्रभु से हमें कभी विमुख न होना चाहिये।

यः प्राणतो निमिषतो महत्वैक इद्राजा जगतो बभूव।
य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।
-ऋ० १०.१२.३

भावार्थ–हे परमात्मन्! आप तो सब जगत् के महाराजाधिराज, समस्त जगत् के उत्पन्न करने हारे, सकल ऐश्वर्य युक्त महात्मा न्यायाधीश है। आप जगत्पति की उपासना से ही धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष, ये चारों पुरुषार्थ प्राप्त हो सकते हैं, अन्य की उपासना से कभी नहीं।

येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्वः स्तभितं येन नाकः।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।
-ऋ० १०.१२१.५

भावार्थ–हे जगत्पते! आपने ही बड़े तेजस्वी सूर्यचन्द्रादि लोक और विस्तीर्ण पृथिवी आदि लोक और सामान्य सुख और सब दुःखों से रहित मुक्ति सुख को भी धारण किया हुआ है, अर्थात् सब प्रकार का सुख आपके अधीन है, ऐसे समर्थ, आकाश की न्याईं व्यापक, आपकी भक्ति से ही लोक परलोक का सुख प्राप्त हो सकता है अन्यथा नहीं।

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्।।
-ऋ० १०.१२१.१०

भावार्थ–हे जगत्पते अन्तर्यामिन्! आप सारे जगतों पर अखण्ड राज्य कर रहे हो। आपके बिना दूसरे किसकी शक्ति है जो प्रत्यक्ष और परोक्ष लोक लोकान्तरों पर शासन करे? आपकी कृपा से ही आपके उपासकों को हम इस लोक और परलोक का ऐश्वर्य प्राप्त हो सकता है।

घटाटोप अज्ञानान्धकार के युग में प्रकाशपुंज के समान दीप्तिमान महर्षि दयानन्द सरस्वती

ले०-सत्येन्द्र सिंह आर्य 751/6, जागृति विहार, मेरठ

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी को आर्य जगत् के प्रतिष्ठित विद्वान् ऋषि वेदमन्त्रार्थ द्रष्टा, पूर्ण योगी, महावैज्ञानिक और आप्त पुरुष मानते हैं। ऋषि दयानन्द जी महाराज स्वामी विरजानन्द जी के योग्यतम शिष्य थे। उन्नीसवीं शताब्दी का वह काल आर्यों के पराभव एवं अधोगति का समय था। सृष्टि के आरम्भ काल से अब तक की सुदीर्घ अवधि पर दृष्टि डालने से कुछ इस प्रकार का चित्र सामने उपस्थित होता है।

सृष्टि के आरम्भ से लेकर करोड़ों वर्ष तक यह भूगोल ओंकार की उपासक, वेद धर्म की प्रचारक आर्य जाति का स्वर्ग धाम बना रहा। मनुष्य जाति इस समय भय, विघ्नों एवं ठोकरों से सुरक्षित थी क्योंकि उसकी पथ प्रदर्शक वैदिक ज्योति थी। इस प्रकाश ही के कारण मनुष्य जाति सच्चाई की सीधी सड़क पर चलती हुई शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करते हुए आनन्द का भोग करती थी। उस काल की साक्षी महर्षि अत्रि के यात्रा लेख में मिल सकती है। निम्नलिखित श्लोक से भी उस समय की स्थिति का समर्थन होता है-

बाल्हीका पल्लवाश्चीना: शूलीका यवना: शका:।

माष गोधूममाध्वीक शस्त्रवैश्वा-नरोचिता:।।

(चरक शास्त्र के चिकित्सा स्थान के तीसवें अध्याय का 299वां श्लोक)

अर्थात् बलख, पल्लव (ईरान), चीन, शूलीक (रोम और यूरोप का पूर्वी भाग), यवन (यूनान), शक (डैन्यूब के उत्तर का देश) इन देशों के रहने वालों का माष, गोधूम और अंगूर आहार है। वे पुरुष वेद शास्त्र के बड़े विद्वान् और शिल्पकला आदि के श्रेष्ठ बनाने और प्रयोग करने वाले हैं। इससे अगले श्लोकों में वे प्राच्य (ब्रह्मा) और मलाया आदि देशों का वर्णन करते हैं। इससे स्पष्ट प्रकट है कि समस्त एशिया और योरुप के देशों के रहने वाले सात्विक भोजन करने वाले, वेद शास्त्र के विद्वान्, उच्च कोटि के शिल्पी, कलायन्त्रों के बनाने वाले और चलाने वाले थे। उस समय मनुष्य जाति केवल वेदशास्त्र के आश्रित होकर सब प्रकार की उन्नति कर रही थी जिसकी आज तक कल्पना करनी भी कठिन है। महाभारत काल तक वैदिक विचारधारा के अतिरिक्त कोई मत-पन्थ नहीं था।

परमात्मा की सृष्टि में उसके रचे पदार्थ से एक से अधिक प्रयोजन पूरे करते हुए दिखाई देते हैं और सचमुच यह पृथिवी अनेक प्रयोजनों की सिद्धि के लिये है। एक ओर हमें यह पृथिवी धर्मात्माओं के लिये स्वर्ग दिखाई देती है तो दूसरी ओर यह पृथिवी पापी जीवों के लिये नरक बन रही है। ऋषि श्रेणी और पिशाच श्रेणी के पुरुष इसी पृथिवी पर रहते हैं। उनके लिये कोई अलग-अलग लोक या स्थान नहीं है। इस धरा ने धर्मात्माओं के लिये आदि सृष्टि से लेकर करोड़ों वर्षों तक स्वर्ग का काम दिया। धीरे-धीरे पापात्माओं की संख्या बढ़ती गई। अब से कोई सवा छ: हजार वर्ष पूर्व तक आते-आते आर्यों की सन्तान धर्म कर्म से पतित होने लगी। हृदय अपस्वार्थ और अधर्म से मलिन होते गये। यद्यपि इस समय तक प्रकाश (वेद ज्ञान) का प्रचार करने वाले कई ऋषि भी पृथिवी पर उपस्थित थे परन्तु अधर्म के वेग के कारण अज्ञानांधकारी बादल गहराते गये। इसकी परिणति महाभारत के युद्ध के रूप में हुई। इस भीषण युद्ध में जहां क्षत्रिय वीर धर्म के लिये मरे, वहां ऋषि लोग भी धर्म की रक्षा करते हुए काम आये और परलोकगमन से पृथिवी को अन्धकार में छोड़ गये। वेद के प्रकाश के प्रचारकों का क्रम अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा और उनके शिष्य ब्रह्मा से लेकर जैमिनी ऋषि तक महाभारत के युद्ध के साथ समाप्त होता है और यहीं से पृथिवी के अज्ञानांधकार का काल धीरे-धीरे आरम्भ होता है।

प्रकाश के अभाव में अंधकार अवश्यम्भावी है। वैदिक युग में वेदानुयायी, जितेन्द्रिय, आस्तिक, सदाचारी, धर्मात्मा, आर्य पुरुष इस पृथिवी पर बसते थे, वहीं अज्ञानांधकार के युग में पृथिवी के नाना भागों एवं देशों में इन्द्रियाराम, वाममार्गी, काल्पनिक विश्वासों के प्रति आग्रही, मन्दमति, नास्तिक, पुराणी, जैनी, किरानी, कुरानी और उनकी शाखाएं जो एक हजार तक संख्या में पहुंचती हैं, पृथिवी के तल को ढांपते हुए मनुष्य जाति को उनके आर्यत्त्व, वैदिक ज्योति, वर्णाश्रम व्यवस्था एवं ईश्वर की उपासना से विमुख करा, नरक कुण्ड में गिराकर दु:खों को भुगवाने लगीं वह वैदिक कालीन मैत्री का राज्य ऐसे समय में मनुष्य जाति को ढूंढे नहीं मिलता। धर्म और न्याय पृथिवी से तिरोहित हो गए। मनुष्य जाति में एक वैदिक धर्म के स्थान पर एक हजार के लगभग पंथ प्रचलित हो गए। एक संस्कृत भाषा के स्थान पर एक सहस्र से अधिक भ्रष्ट (अवैज्ञानिक) भाषाओं में बोलते हुए आर्य सन्तान अपनी अपनी अधोगति का रूप दर्शाने की स्थिति में पहुंच गई। प्रेम के स्थान पर फूट, उपकार के स्थान पर हानि, सहायता के स्थान पर ईर्ष्या और द्वेष भर गया है। पृथिवी पर उपस्थित इस दशा को देखकर क्या कोई कह सकता है कि ऐसा नरक तुल्य जीवन जीने वाले स्वर्गधाम में बसने वाले आर्यों के कुल से चले आ रहे हैं। परन्तु कर्म गति को जानने वाले सूक्ष्मदर्शी जन जानते हैं कि ऋषि सन्तान अपने कुकर्मों के कारण ही इस समय पृथिवी पर दु:ख और अंधकार की भागी बन रही है।

अंधकार के काल में दीपकों का प्रकाश: वेद ज्ञान रूपी सूर्य के अभाव में उत्पन्न हुए अंधकार को दूर करने के लिये पृथिवी के विभिन्न देशों में विभिन्न पुरुषों ने समय-समय पर दीपक जलाए परन्तु दीपक सूर्य का काम नहीं दे सकते। इसलिये मनुष्य जाति दीपक रखने पर भी अंधकार से नहीं निकली। दीपक का प्रकाश धुएं के बिना नहीं होता। अत: दीपक जहां मार्ग दिखाने का काम करते हैं, वहां अपने दुर्गन्धित सड़े हुए धुएं से शरीर के भीतर क्षय रोग के बीज बो देते और देखने की शक्ति को ही निर्बल कर देते हैं। वास्तव में दीपकों का प्रकाश स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है और यह परिमित प्रकाश अत्यन्त ही संकुचित स्थान में काम कर सकता है। यही कारण है कि इस समय संसार में हजार के लगभग मतों के दीपक और सहस्राधिक भाषाओं के फानूस जगमगा रहे हैं परन्तु संसार उस सुख को प्राप्त नहीं कर पा रहा जो उस समय प्राप्त था कि जब एक वेद का सूर्य आत्मा को प्रकाश दे रहा था और एक देववाणी संस्कृत हृदयों को जोड़ रही थी। परन्तु डूबते को तिनके का सहारा समझकर अंधकार में दीपक ही पथप्रदर्शक माने जाने लगे।

महाभारत के काल के पश्चात् जब संसार में वाम मार्ग बढ़ने लगा और लोग मांस, मद्य और व्यभिचार की अंधेरी गुफा में भटकने लगे तो पृथिवी पर महात्मा बुद्ध ने वाममार्ग को रोकने के लिये पवित्रता और अहिंसा का दीपक जलाया और कुछ काल के लिए लोगों को सीधा मार्ग दिखाया परन्तु साधनों की शिक्षा देते हुए बुद्ध ने ईश्वर का नाम तक न लिया। इसका परिणाम नास्तिकता का फैलाव हुआ। नास्तिकपन से व्याकुल पृथिवी प्रकाश की इच्छा कर ही रही थी कि शंकराचार्य ने नवीन वेदान्त का दीपक लेकर अंधकार को भगाना चाहा परन्तु इस दीपक में भी त्याग का अंश तो प्रकाश था परन्तु जीव को ब्रह्म बतलाना विषैला धुआं था। आचार्य शंकर वेद रूपी सूर्य की ओर कदम नहीं बढ़ा सके। कनफ्यूशस चीन में, पैथागोरस, सुकरात और अफलातून आदि यूरोप में प्रकाश का दीपक जलाते रहे परन्तु प्रकाश के भण्डार वेद और वेद की वाणी संस्कृत की अनुपस्थिति के कारण उनके दीपक अत्यल्प प्रकाश देकर बुझ गये और संसार को वेद की प्रतीक्षा और अन्वेषण करते छोड़ गये। संसार के सामने दो और दीपक भी उपस्थित हुए जिन्होंने अंधकार को स्थायी रूप से भगाना चाहा। उनसे भी अंधकार तो नहीं भगाया जा सका परन्तु उनके विषैले धुएं से लाखों लोग अज्ञान रूपी क्षय रोग के रोगी बन गये। उनमें से एक दीपक ईसाई मत का है जिसने प्रेम के प्रकाश के अंश को लेकर लोगों को मार्ग दिखाया परन्तु अविद्या के धूम्र ने उन लोगों को मनुष्य पूजा और भ्रान्त धारणाओं की उपासना का मोल लिया हुआ दास बना दिया अंधकार पूर्ववत् पसर गया। दूसरा दीपक इस्लाम मत का है जिसने एकेश्वरवाद के प्रकाश के अंश से अंधकार को कुछ-कुछ भगा दिया परन्तु धर्मयुद्ध अविद्या के विषैले धुएं से रक्त की नदियां बहाकर लोगों को मनुष्य पूजा और भ्रान्त

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय

अमर शहीद-पं. लेखराम जी

गीता में श्रीकृष्ण जी महाराज ने भी कहा है- स्वधर्मे निधनं श्रेय: परधर्मो भयावह: अर्थात् अपने धर्म के लिए मर मिटना भी कल्याणकारी होता है, दूसरों का धर्म भय देने वाला होता है। गीता की इन्हीं पक्तियों का अनुसरण करने वाले हमारे नायक अमर शहीद धर्मवीर पं. लेखराम जी आर्य मुसाफिर थे। पं. लेखराम जी आर्य समाज तथा महर्षि दयानन्द के पक्के अनुयायी थे। महर्षि दयानन्द के पश्चात उनके अधूरे कार्यों को पूरा करने का व्रत लेकर पं. लेखराम जी ने अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया। अपने धर्म के प्रति उनके अन्दर अपार निष्ठा थी।

पं. लेखराम जी का जन्म जेहलम जिले के एक ग्राम सैदपुर में हुआ था। बाल्याकाल में पं. लेखराम का अध्ययन फारसी एवं उर्दू के माध्यम से हुआ। सामान्य शिक्षण प्राप्त करने के पश्चात वे सत्रह वर्ष की आयु में पुलिस में भर्ती हो गए। इस विभाग में उन्नति करते-करते वे सार्जेंट के पद तक पहुंच गए। पुलिस की सेवा करते-करते पं. लेखराम जी को आर्य समाज का प्रकाश मिला। इससे वे इतने प्रभावित हुए कि सरकारी सेवा को लात मार कर आर्य समाज के प्रचारक बन गए। उर्दू और फारसी का ज्ञान तो था ही परन्तु इन्होंने हिन्दी और संस्कृत का ज्ञान प्राप्त करने के लिए अभ्यास शुरू कर दिया। तत्पश्चात वैदिक ग्रन्थों के गम्भीर स्वाध्याय ने आपकी योग्यता को चार चांद लगाए। पं. लेखराम ने कुरानशरीफ का अध्ययन तो तन्मयता से किया था किन्तु बाईबल तथा अन्य मतावलम्बी सिद्धान्त ग्रन्थों का भी तुलनात्मक अध्ययन किया। उस अध्ययन के निष्कर्ष को जन साधारण तक पहुंचाने के लिए उसे लेखबद्ध किया और उन सब लेखों और पुस्तकों का संग्रह करके पुस्तकाकार में छपवा कर उस पुस्तक का नाम कुलियात आर्य मुसाफिर रखा जो उस अमर शहीद की योग्यता तथा अनुभव का प्रतीक है।

पं. लेखराम जी महर्षि दयानन्द के अनुयायी थे। महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार करने के लिए उन्होंने रात-दिन एक किया। अपने जीवन की, अपने परिवार की परवाह न करते हुए जहां पर भी, जिस समय भी उनकी आवश्यकता महसूस की गई तुरन्त सभी कार्यों को छोड़कर वहां पहुंचना उनकी धर्म के लिए अपार निष्ठा को दिखाता है। जिस जाति में, जिस धर्म में ऐसे धर्मनिष्ठ और वीर पुरूष होते हैं वही धर्म व जाति उन्नति करता है। आर्य समाज का यह सौभाग्य था कि उसे पं. लेखराम जैसा धुन का धनी व्यक्ति मिला। महर्षि दयानन्द जी ने जिन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए *आर्य समाज की स्थापना* की थी, उन्हें पूरा करने के लिए पं. लेखराम जी ने अपने आपको पूर्ण रूप से समर्पित कर दिया। पुलिस विभाग की नौकरी को छोड़ कर अपना सम्पूर्ण जीवन वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के लिए समर्पित कर दिया। पं. लेखराम जी एक निर्भीक प्रचारक थे। उन्हें बार-बार चेतावनी दी गई कि जिस विचारधारा का वह प्रचार कर रहा है उसे बन्द करें नहीं तो इसकी बहुत अधिक सजा मिलेगी। पं. लेखराम पर इसका कोई प्रभाव नहीं हुआ। वह अपना काम करते गए और एक दिन वह भी आया जब उनकी हत्या कर दी गई। अपने बलिदान से पहले उन्होंने एक वसीयत की थी कि आर्य समाज से साहित्य निर्माण का कार्य बन्द नहीं होना चाहिए।

अमर शहीद पं. लेखराम जी एक अत्यन्त प्रतिभाशाली वक्ता एवं अन्वेषक थे। प्रत्येक घटना तथा घटना की गहराई तक पहुंचना उनका एक विशेष गुण था। इस अन्वेषण के कार्य के लिए उन्हें विभिन्न स्थानों पर अनेकों बार आना जाना पड़ा। प्रचार तथा शास्त्रार्थ के उद्देश्य से वे निरन्तर अपने बलिदान तक इधर-उधर भ्रमण करते रहे। इसी कारण पं. लेखराम जी का नाम आर्य पथिक अथवा आर्य मुसाफिर पड़ गया। इस्लाम से सम्बन्धित सब सम्प्रदायों से इनके शास्त्रार्थ हुआ करते थे किन्तु मिर्जाई मतावलम्बियों से इनकी अनेक टक्करें होती रहीं। मिर्जा गुलाम अहमद कादियानी विशेष रूप से इनसे चिढ़ते थे क्योंकि पं. लेखराम ने अहमदिया सम्प्रदाय और उसके स्वयंभू पैगम्बर को अपनी आलोचना का लक्ष्य बनाया था। इस सम्प्रदाय की मान्यताओं के खण्ड्न में उन्होंने अनेक ग्रन्थ निकाले। मिर्जा साहिब ने इस अमर शहीद को आतंकित करने के लिए कई अवैध और घृणित साधनों को अपनाया किन्तु यह साहसी वीर एक बार लगभग एक मास तक मिर्जा साहिब के गढ़ कादियां में दहाड़ता रहा। मिर्जा साहिब के सारे इलहाम और भविष्यवाणियों की पोले खुली तो वे ऐसे दयानन्द भक्त, धर्मप्रेमी को सहन न कर सके। एक कायर और कृतघ्न व्यक्ति जो शुद्ध होने के बहाने से उनके पास लाहौर भेज दिया, जिसने अवसर पाते ही इस अमर शहीद को अंगड़ाई लेते समय उनकी छाती में छुरा घोंप दिया। महर्षि दयानन्द के पश्चात यह आर्य समाज का दूसरा बलिदान था।

पण्डित लेखराम जी ने मरते समय आर्य समाज के नाम एक सन्देश दिया कि-आर्य समाज से तहरीर और तकरीर का काम बद नहीं होना चाहिए। इस प्रकार अमर शहीद के गुणों का कहां तक वर्णन करें। प्रचार के कार्य के लिए चलती हुई गाड़ी से अपने जीवन की ममता को छोड़ कर छलांग लगाना, अपनी पति परायण पत्नी और स्नेहशील माता से निस्पृह होकर प्रचार कार्य में जुटे रहना, अपने एकाकी मरणासन्न पुत्र को रूग्णावस्था में छोड़ कर अपनी जाति के सैंकडों लोगों को बचाने के लिए चले जाना, यह घटनाएं तो उनके धर्म धुनी जीवन की साधारण घटनाएं बन गई थी। जब एकाकी पुत्र के परलोक गमन का तार उन्हें मिला तो यह कहना कि बच्चे की चिन्ता से मुझे मुक्त करने और जाति की सेवा में अधिक तत्परता से सन्नद्ध होने के लिए मेरे प्रभु ने स्वयं दायित्व सम्भाल लिया।

6 मार्च का दिन हमें उस महान् बलिदानी का स्मरण कराता है जिसने आर्य जाति के कल्याण की भावना को धारण करके अपना बलिदान दिया। ऐसे धर्मप्रेमी, धर्मवीर, अमर हुतात्मा, आर्य समाज के दीवाने आर्य मुसाफिर पं. लेखराम जी को उनके बलिदान दिवस पर श्रद्धाजंलि देते हुए हम सभी उस आर्य पथिक के मार्ग का अनुसरण करें। पं. लेखराम का यही सपना था कि आर्य समाज में तहरीर और तकरीर का कार्य चलता रहे। पं लेखराम जी के बलिदान से शिक्षा लेकर अपने धर्म के लिए, आर्य समाज के प्रचार-प्रसार के लिए कार्य करें। यही हमारी उस धर्मवीर को सच्ची श्रद्धाजंलि होगी।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

64 वां वार्षिकोत्सव एवं ऋषि बोधोत्सव

आर्य समाज मन्दिर राजपुरा टॉऊन में ऋषि बोधोत्सव एवं 64 वें वार्षिक उत्सव के उपलक्ष्य में ऋग्वेदीय महायज्ञ का आयोजन दिनांक 12 मार्च सोमवार से 18 मार्च रविवार तक किया जा रहा है। इस महायज्ञ के ब्रह्मा आर्य जगत के ख्याति प्राप्त वैदिक प्रवक्ता स्वामी सम्पूर्णानन्द जी महाराज गुरूकुल नलवी खुर्द होंगे तथा भजनोपदेशक आचार्य सतीश सत्यम् के मधुर भजन होंगे। यह कार्यक्रम प्रतिदिन प्रात: 6:30 से 9:00 बजे तक तथा सांय 4:00 से 7:00 बजे तक चलेगा। 18 मार्च रविवार को 8:00 से 10:00 बजे तक 151 कुण्ड़ों पर यज्ञ की पूर्णाहुति होगी। 10:00 से 12:00 बजे तक भजन व प्रवचन होंगे। तत्पश्चात ऋषि लंगर होगा। आप सभी धर्मप्रेमी सज्जनों से निवेदन है कि परिवार सहित इस महायज्ञ में पधार कर पुण्य के भागी बनें।

मन्त्री आर्य समाज राजपुरा टॉऊन

प्रकृति संरक्षण के प्रति महर्षि दयानन्द का वैदिक दृष्टिकोण

ले.-पं. वेदप्रकाश शास्त्री, शास्त्री भवन, 4-E कैलाश नगर, फाजिलका (पंजाब)

(गतांक से आगे)

20. यह जल, ओषधियां हमारे लिए सुन्दर मित्रों के सदृश हितकारिणी होवें। यजु. 35/12

21. हमारी प्रजाओं का कल्याण हो। साथ ही हमारे पशु निर्भय हों। यजु. 36/22

22. मनोवांछित सुख सिद्धि, पवित्रता, रक्षा एवं पीने के लिए दिव्यगुणयुक्त यह जल हमारे लिए सुखकारी हो। चारों ओर से हम पर सुखों की वर्षा करे। यजु. 36/12

23. पर्वत हमारे लिए स्थिर और सुख शान्तिदायक हों। नदियां और समुद्र कल्याणकारक हों। जल भी शान्ति के लिए हों। ऋ. 7/35/8

24. वायु हमारे लिए सुखकारी होकर बहे। सूर्य हमारे लिए कल्याणकारी होकर तपे। अत्यन्त शब्द करता हुआ दिव्य गुणयुक्त विद्युत् से युक्त मेघ हमारे लिए सम्यक् वर्षा करे। यजु. 36/10

25. पर्वत, नदियां, वन सदृश स्थान शान्तिदायक एवं एकान्त स्थान होते हैं। इसीलिए ऋषि-मुनि, ज्ञानी, सन्त, महात्मा वनों में निवास करते थे। नदी तट पर निवास एवं विचरण करते थे। तप, त्याग का जीवन व्यतीत करते हुए वेद आदि शास्त्रों का आगन्तुक महानुभावों को सन्देश देते थे। ऐसा इसलिए था क्योंकि पर्वत और नदी-तटों पर ही बुद्धि का विकास होता है-

पर्वतों के निकट अथवा गुफा में और नदियों के संगम स्थल में योगाभ्यास से विचारशील व्यक्ति उत्तम बुद्धि एवं कर्म से युक्त होता है। यजु. 26/15

प्रयाग में गंगा-यमुना का संगम होता है। प्राचीन काल में यहां पर बड़े-बड़े यज्ञ हुआ करते थे। इसीलिए इसका नाम "प्रयाग" पड़ गया। हरिद्वार पर्वतीय तलहटी में गंगातट पर बसा हुआ है। अत्यन्त सुरम्य स्थल है। बड़े-बड़े ऋषि-मुनि यहां गुफाओं में तप किया करते थे। इसीलिए इसे हरिद्वार= ईश्वर की प्राप्ति का द्वार कहते हैं। ऐसे शुद्ध, पवित्र, सुन्दर, आध्यात्मिक स्थान भला और कहां मिलेंगे? महर्षि दयानन्द ने भी हिमालय की गुफाओं में साधना की थी। हरिद्वार तो उनकी कर्मस्थली भी थी। पाखण्ड खण्डिनी पताका यहीं पर लहराई थी। पौराणिक पण्डितों से शास्त्रार्थ किया था। उनकी गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति पर आधारित स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा स्थापित गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार आज भी महर्षि की कीर्ति पताका को थामे हुए है।

26. महर्षि दयानन्द कहते हैं-

अध्यापक और अध्येता को चाहिए कि प्रकृति से लेकर पृथिवी पर्यन्त पदार्थों को रक्षा आदि के लिए जानें अर्थात् उन्हें इनके उपयोग के विभिन्न प्रकारों को जानना चाहिए। यजु. 33/49

27. महर्षि सर्वत्र सुख और शान्ति चाहते हैं। प्रकृति के अन्तर्गत जितनी भी वस्तुएं आती हैं, वह उन सभी से शान्ति की कामना करते हैं-

द्यौः शान्तिः, अन्तरिक्षं शान्तिः, पृथिवी शान्तिः, आपः शान्तिः, औषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिः, विश्वे देवाः शान्तिः, ब्रह्म शान्तिः, सर्वं शान्तिः, शान्तिः एव शान्तिः सा मा शान्तिः एधि।। यजु. 36/17

हे ईश्वर! द्युलोक शान्तिदायक हो, अन्तरिक्षलोक शान्तिपद हो, पृथिवी शान्तियुक्त हो, जल शान्तिकारक हो, ओषधियां शान्तिकारिणी हों। वनस्पतियां शान्तिदायक हों, सम्पूर्ण दिव्य शक्तियां और पदार्थ सुखदायक हों अथवा सभी विद्वान् उपद्रवनिवारक और शान्तिप्रदायक हों, वेदज्ञान सर्वजनहिताय शान्तिदायक हो। सभी पदार्थ-वस्तुएं सुखदायी हों। शान्ति की भावना भी स्वयं शान्तियुक्त हो। वही शान्ति जो उपर्युक्त वस्तुओं में विद्यमान है-मुझे भी वृद्धि की ओर ले जाए।

यदि सभी मनुष्यों को ऊपर वर्णित वस्तुओं से शान्ति की प्राप्ति हो जाए तो भला उसे और क्या चाहिए? परन्तु इसके लिए प्रयत्नशील होना पड़ेगा। उद्यम करना होगा तभी इच्छित वस्तु की प्राप्ति हो सकती है। केवल इच्छा से नहीं।

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।।

28. वृक्षों की सभी जड़ों, शाखाओं, वनस्पतियों, फूलों, फलों, ओषधियों के लिए उत्तम क्रिया अवश्य करनी चाहिए। मनुष्य नित्य सुगन्ध्यादि पदार्थों को अग्नि में छोड़ अर्थात् हवन कर पवन और सूर्य की किरणों द्वारा वनस्पति, औषधि, मूल, शाखा, पुष्प और फलादिकों में प्रवेश कराके सब पदार्थों की शुद्धि कर आरोग्यता की सिद्धि करें। यजु. 22/28, 29

29. हे यज्ञशील विद्वन्! यह ऋतुएं आपके यज्ञ का विस्तार करें। ये महीने आपके यज्ञीय पदार्थों की रक्षा करें। यह संवत्सर अर्थात् वर्ष यज्ञ को धारण एवं पुष्ट करे और हमारी प्रजा की सब ओर से न्यायपूर्वक रक्षा करो। यजु. 26/14

30. निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्ताम्।। यजु. 22/22

हमारी प्रत्येक कामना के अनुसार मेघ वर्षा करें। हमारी सभी प्रकार की औषधियां उत्तम फल वाली होकर परिपक्व हों।

31. हे मनुष्यो! प्रशस्त फूलों वाली, प्रशस्त फलों वाली ओषधियों से आनन्दित होवो। जिस प्रकार संग्राम में घोड़े विजय करने वाले होते हैं वैसे ही ये ओषधियां विविध रोगों को रोकने वाली हैं। साथ ही ये रोग रूप विघ्नों से पार ले जाने वाली हैं। यजु. 12/77

32. हे ओषधियो! आपका खोदने वाला हिंसित मत हो अर्थात् खुदाई के समय किसी प्रकार की चोट न आए अथवा खोदने वाला आपको हिंसित न करे अर्थात् तुम्हें जड़ से ही न उखाड़ दे अथवा काट दे। जिसके लिए तुम्हें खोदता हूँ, वह हमारे दोपाए मनुष्यादि और चौपाए आदि पशु सभी नीरोग हों। यजु. 12/95

33. ओषधियों के रूपों की भिन्नता का वर्णन करते हुए कहते हैं-

जो ओषधियां फल वाली हैं अर्थात् जिन पर फल आते हैं, जो फल रहित हैं अर्थात् जिन पर फल नहीं आते हैं। जो फूलों से रहित हैं अर्थात् जिन पर फूल नहीं लगते। केवल फल लगते हैं। यथा-उदुम्बर (गूलर)। फल-फूल से रहित गिलोय। और जो फूलों वाली हैं अर्थात् कुछ में फूल आने के पश्चात् फल लगते हैं। यथा आम, केला आदि। किसी में फूल ही होते हैं, फल नहीं होते। यथा-बोगनबेलिया तथा एकादृश अन्य बेलें। यजु. 12/89

प्रस्तुत उद्धरणों से ज्ञात होता है कि महर्षि दयानन्द जल, वायु, आकाश, अन्तरिक्ष, पृथिवी, वन-उपवन, वृक्ष, ओषधियां, नदी, नाले, झीलें, सागर, पशु-पक्षी, वन्य जीव-जन्तु, चाहे जलचर हों अथवा थलचर, नभचर हों या अभयचर-जड़-चेतन सभी के प्रति संवेदनशील हैं, सभी का कल्याण चाहते हैं। वातावरण शुद्ध हो। सभी प्राणी सुखपूर्वक सांस ले। खाद, पेय सभी वस्तुएं शुद्ध हों। यही महर्षि की कामना है।

पं. युधिष्ठिर मीमांसक स्मृति पुरस्कार से पुरस्कृत

गुरुकुल हरिपुर जि. नुआपड़ा ओड़िशा के संचालक पूज्य डॉ. सुदर्शनदेव आचार्य जी के द्वारा किये जा रहे आर्ष ग्रन्थों की रक्षा एवं पठन-पाठन कार्य हेतु आर्य समाज सान्ताक्रुज मुम्बई की ओर से 28 जनवरी को पूज्य आचार्य जी को पं. युधिष्ठिर मीमांसक स्मृति पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। जिसमें तीस हजार की राशि, शाल एवं श्रीफल प्रदान किया गया। पूज्य आचार्य जी का जीवन आर्षग्रन्थों के पठन-पाठन एवं संरक्षण के लिये ही अर्पित है।

ध्यान रहे इस वर्ष 27, 28, 29 जनवरी को गुरुकुल के वार्षिक महोत्सव के अवसर पर गुरुकुल के 23 ब्रह्मचारी अष्टाध्यायी धातुपाठ, लिंगानुशासन, उणादिकोष, पांच दर्शन, आर्योद्देश्य रत्नमाला आदि आर्ष ग्रन्थों को कण्ठस्थ कर आद्योपान्त सुनाये। पूज्य आचार्य जी का आर्षग्रन्थों के प्रति श्रद्धा का ही यह परिणाम है।

आर्य मर्यादा साप्ताहिक में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं।

ओजोन मण्डल और पृथ्वी का पर्यावरण

-ले० शिवनारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा

सम्पूर्ण सृष्टि एवं ऊर्जा का मूल स्त्रोत सूर्य है। सूर्य से प्राप्त प्रकाश एवं ऊर्जा से सम्पूर्ण जीवधारियों का जीवन चलता है। इतना उपयोगी होने के साथ ही सूर्य अनेकों प्रकार की घातक किरणें पृथवी की ओर फैंकता है। यदि ये किरणें पृथ्वी की सतह तक पहुंच जाए तो हमारे जीवन को खतरा उत्पन्न हो सकता है। प्रकृति ने इन्हें रोकने की व्यवस्था भी कर रखी है। प्रकृति ने हमारी पृथ्वी के चारों ओर 25 किमी. से 40 किमी. की ऊंचाई तक ओजोन गैस का एक रक्षा कवच छाते की तरह तान रखा है। यह सूर्य की हानिकारक किरणों को पृथ्वी की सतह तक आने से रोक देता है। हानि कारक किरणें ओजोन परत से टकराकर परावर्तित हो जाती हैं। इन खतरनाक सूर्य की पराबैंगनी किरणों से जीवधारियों और मनुष्य के रोगों से लड़ने की प्रतिरोधक शक्ति का ह्रास होता है। आंखों में मोतियाबिन्द उतर आता है। चमड़ी के कैन्सर की आशंका कई गुना बढ़ जाती है।

ओजोन एक गैस है। इसका पता सर्वप्रथम एक जर्मन वैज्ञानिक क्रिश्चियन स्कान वेन ने किया था। यह आक्सीजन से मिलती-जुलती है। वायुमण्डल में ओजोन गैस ऐसे तैयार होती है जैसे किसी फैक्ट्री में उत्पन्न हो रही है।

ओजोन परत की खोज सर्वप्रथम सन् 1913 में दो फ्रांसीसी वैज्ञानिकों चार्ल्स फार्वी और हेनर व्यूसन ने की थी। ओजन गैस वायुमण्डल में बहुत कम है। अर्थात् 10 लाख के एक हिस्से से भी कम ओजोन (O_3) में आक्सीजन (O_2) से एक परमाणु अधिक होता है। ओजोन गैस का रंग हल्का नीला तथा गंध तीखी होती है। ओजोन मण्डल में आक्सीजन पर सूर्य की पराबैंगनी किरणों की क्रिया से यह उत्पन्न होती रहती है।

पिछले कुछ वर्षों से वायुमण्डल में ओजोन कैस की कमी अधिक अनुभव की गई है। ओजोन की अधिक कमी वाले क्षेत्र को 'ओजोन छिद्र' की संज्ञा दी गई है। यदि ओजोन गैस की और कमी होती है तो सूर्य का खतरनाक विकिरण पर्याप्त मात्रा में पृथ्वी तक पहुंच जायेगा और हमारे जीवन के लिए खतरा पैदा करना आरम्भ कर देगा। ओजोन के घटते स्तर की खोज सन् 1985 में तीन वैज्ञानिकों फारमैन, गार्डिनर और शाकलिन ने की थी। परन्तु ओजोन स्तर में छिद्र होने की खोज एक शेखुड रोलैण्ड ने की थी। इस पर उनको तीन साथियों के साथ संयुक्त रूप से नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

ब्रिटेन के अन्टार्कटिका सर्वेक्षण दल ने सन् 1985 में एक सर्वेक्षण रिपोर्ट सन् 1984 की जिससे ज्ञात हुआ कि सन् 1972 से 1984 के बीच ओजोन में लगभग 40 प्रतिशत की कमी पाई गई। इस रिपोर्ट की पुष्टि अन्य वैज्ञानिक संस्थानों ने भी की। अमेरिका की तीन महत्वपूर्ण संस्थाओं (1) राष्ट्रीय वैज्ञानिकी एवं अन्तरिक्ष प्रशासन (Nasa नासा) (2) राष्ट्रीय विज्ञान फाउन्डेशन तथा (3) राष्ट्रीय समुद्री एवं वायु-मण्डलीय प्रशासन ने ओजोन की कमी पर बहुत अनुसंधान कार्य किया। इन्होंने अन्टार्कटिका के ऊपर एक स्थान पर ओजोन की अत्याधिक कमी पाई जिसे ओजोन छिद्र नाम दिया क्योंकि यहां से सूर्य की पराबैंगनी किरणें पृथ्वी तक पहुंच सकती है। चिन्ता का विषय तो यह है कि ओजोन परत अनुमान से कहीं अधिक तीव्र गति से छिनती जा रही है।

अनुसंधान कर्ताओं ने बताया कि सन् 1981 से सन् 1991 के बीच ओजोन छिद्र तेरह गुना अधिक बढ़ गया था। सन् 1992 की एक स्टेट ऑफ दी वर्ल्ड की रिपोर्ट के अनुसार उत्तरी गोलार्द्ध के घनी आबादी वाले क्षेत्र में ओजोन सुरक्षा कवच अनुमान के विपरीत दुगुनी गति से सिकुड़ता जा रहा है। विभिन्न संस्थाओं द्वारा किये गये अनुसंधान से दो ओजोन परत के छिद्रों का पता लगाया गया है। पहला ओजोन छिद्र अन्टार्कटिका महासागर के ऊपर तथा दूसरा ओजोन छिद्र आर्कटिक महासागर के ऊपर है। ओजोन गैस में कमी सितम्बर, अक्टूबर के महीनों में अधिक पाई जाती है।

ओजोन गैस की कमी के कारण-

(1) मानवीय कारक-रसायन विज्ञान के अनुसार यदि ओजोन और क्लोरीन को मिलाया जाये तो ओजोन आक्सीजन में बदल जाती है। रसायनों के मनमाने उपयोग से विश्व के अनेक देश पर्यावरण को खतरनाक और विषैला बना रहे हैं। एक देश की जहरीली हवा दूसरे देश तक पहुंच जाती है। ऐसे कुछ रसायन और गैसें ऊपर वायुमण्डल में पहुंच कर ओजोन की छतरी में छिद्र कर रही है। इन गैसों में सबसे खतरनाक रसायन है क्लोरो फ्लोरो कार्बन। ये रसायन कार्बन, क्लोरीन तथा फ्लोरीन से मिलकर बनते हैं। ये रसायन समताप मण्डल में जाकर 50 से 100 वर्ष तक ज्यों के त्यों बने रहते हैं। इन पदार्थों का आविष्कार सन् 1928 में हुआ था। इनका उपयोग रेफ्रीजरेटरों, एयर-कंडीशनरों, रासायनिक फुहारों तथा अनेक पदार्थों के निर्माण में किया जाता है। इन रासायनिक पदार्थों के उपयोग से तथा उद्योग-धन्धों से गैसों के रूप में निकलने वाले क्लोरो-फ्लोरो कार्बन वायुमण्डल में पहुंच रहे हैं। चूंकि इनमें क्लोरीन की मात्रा अधिक होती है इसलिए यह वायुमण्डल में ओजोन की परत को नष्ट कर रहा है। जिससे ओजोन की मात्रा घट रही है।

(2) प्राकृतिक कारक-वायुमण्डल में होने वाले प्राकृतिक कारणों की वृद्धि से वायुमण्डल में ओजोन की काफी कमी हो रही है। क्लोरीन के आविष्कार के बाद प्रारम्भ में वैज्ञानिकों ने सोचा था कि क्लोरीन के द्वारा थोड़ी सी मात्रा में ओजोन का विघटन होगा परन्तु उन्हें शीघ्र ही पता चल गया कि एक ओजोन अणु को तोड़ने के बाद क्लोरीन का परमाणु शान्त नहीं बैठता है बल्कि मुक्त होकर एक के बाद एक ओजोन पर आक्रमण करता रहता है। यह रासायनिक क्रिया तब तक चलती रहती है। जब तक कि क्लोरीन का परमाणु नाइट्रोजन आक्साइड के किसी अणु से न टकराए। अनुमान है कि क्लोरीन का एक परमाणु लगभग 1 लाख ओजोन अणुओं को विघटित कर देता है।

(3) पराध्वनि वायुयान-पराध्वनि जैट वायुयानों द्वारा ओजोन मण्डल प्रदूषित होता है। इन वायुयानों में उच्च ज्वाला तापमान पर दहन प्रक्रिया के अन्तर्गत नाइट्रिक आक्साइड निकलती है जिसके फलस्वरूप ओजोन की मात्रा में कमी हो जाती है।

(4) उर्वरक-नाइट्रोजन वाले उर्वरक जो उद्योगों में तैयार किये जाते हैं। ओजोन प्रदूषण के लिए अत्यधिक उत्तरदायी है।

(5) ज्वालामुखी उद्‌भेदन-ओजोन की मात्रा को कम करने वाला शक्तिशाली स्त्रोत ज्वालामुखी उद्‌भेदन है। ज्वालामुखी उद्‌भेदन से निकले हुए बादल 50 किमी. की ऊंचाई तक समतापमण्डल में प्रवेश करते हैं। यह उद्‌भेदन दो प्रकार से वायुमण्डल को प्रभावित करता है। (1) क्षोभमण्डल में यह उद्‌भेदन वायु धुंध की परत बनाता है जिसके फल स्वरूप सौर विकिरण की गहनता कम होने से वायुमण्डल शीतल हो जाता है।

(6) समताप मण्डल में क्लोरीन की मात्रा अधिक पहुंचने से ओजोन प्राय समाप्त हो जाती है।

ओजोन परत की सुरक्षा हेतु अन्तर्राष्ट्रीय प्रयत्न:-

ओजोन परत की सुरक्षा के लिए तथा ओजोन की कमी की गम्भीरता को देखते हुए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सभी देश इस समस्या से चिन्तित हैं। विश्व से सभी वैज्ञानिक संगठन इस बात पर एक मत हैं कि यदि हमें ओजोन रूपी सुरक्षा कवच को बचाना है तो वर्तमान दशक में ही सी. एफ. सी. की खपत तथा ओजोन का विनाश करने वाले अन्य रसायनों का प्रयोग बन्द करना होगा। ओजोन परत की सुरक्षा के लिए एक विशेष प्रकार की प्रायोगिक रूप रेखा तैयार की गई है। इस प्रायोगिक रूप रेखा को अण्टार्कटिका ओजोन प्रयोग की संज्ञा दी गई है।

ओजोन की कमी को रोकने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर और भी प्रयास हो रहे हैं।

ओजोन सुरक्षा की दिशा में सन् 1987 में मांट्रियल संधि इस अर्थ में प्रमुख उपलब्धि मानी जाएगी कि पहली बार इस सन्धि पर हस्ताक्षर करने वाले देशों में जिनकी संख्या 1990 में यूरोपीय समुदाय-समुदाय के सदस्यों सहित 66 हो गई थी। अपने सी. एफ. सी. के उत्पादन और खपत को क्रमिक रूप से घटाकर 1986 ई. के स्तर से आधा करने की सहमति प्रदान की। 3 जून से 15 जून सन् 1992 ई. तक रियोडीजेनेरो (ब्राजील) में संयुक्त राष्ट्र के तत्वावधान में पृथ्वी सम्मेलन हुआ। इसमें 115 देशों के शासनाध्यक्ष तथा राष्ट्राध्यक्ष तथा

(शेष पृष्ठ 7 पर)

हम प्रातः उठ प्रभु स्मरण से अपने कार्य में लगें

ले.-डॉ. अशोक आर्य १०४ शिप्रा अपार्टमेन्ट, कौशाम्बी २०१०१० गाजियाबाद उ. पर. भारत

हम सदा आनंदमय जीवन व्यतीत करना चाहते हैं। हम सदा सुखी रहना चाहते हैं। हम सदा शांत रहना चाहते है। किन्तु कैसे? हम प्रातः से सायं तक दुराचार करते है। हमारे यह बुरे आचरण हमें निरंतर नरक की ओर ले जा रहे हैं। बेलन जितने पैसे से कभी घड़ी नहीं मिल सकती। यदि हमें घड़ी खरीदनी है तो हमारे पास पैसा भी इतना होना चाहिए जिससे हमें घड़ी मिल सके। इस प्रकार ही हम यदि सुखी रहना चाहते हैं तो हमारे व्यवहार भी इस प्रकार के होने चाहियें, जो सुख के मार्ग पर ले जाने वाले हों। हम अपने व्यवहार में निरंतर प्रभु चिंतन को बनाए रखेंगे तो ही हमें सुख मिलेगा अन्यथा कैसे ? देखो :-

मानव अपने जीवन को सदा सुखों में ही देखना पसंद करता है। वह सदा सुखी रहना चाहता है। सुखी रहने के लिए उसे अनेक प्रकार के यत्न करने होते हैं। अनेक प्रयास करने होते हैं। इन यत्नों के बिना, इन प्रयासों के बिना, इन पुरुषार्थों के बिना वह सुख का मार्ग प्राप्त नहीं कर सकता किन्तु वह यह सब पुरुषार्थ, यह सब यत्न, यह सब मेहनत नहीं करना चाहता। फिर वह सुखी कैसे हो? अर्थात् नहीं हो सकता।

मानव आज सुख की कामना करने पर भी दुःखी है, ऐसा क्यों? क्योंकि आज वह दूसरे को सुखी देखना पसंद नहीं करता। आज वह दुःखों में इसलिए घिरा हुआ है क्योंकि उसे अपने पास पड़ौस में लोग सुखों के साथ जीवन बिताते हुए दिखाई देते हैं। उन का सुखी जीवन ही उसके लिए दुःख का कारण बना हुआ है। वह यह नहीं देखता कि उसके पास साधन होते हुए भी वह अपने लिए कपड़े धोने की मशीन नहीं ला रहा, अपने आप को सुखी बनाने की ओर कदम नहीं बढ़ा रहा। किन्तु अपने पड़ौसी के पास कपड़े धोने की मशीन देख कर उसे कष्ट होता है कि उसके पड़ौसी ने यह मशीन क्यों प्राप्त कर ली है? पड़ौसी ने अपने घर पर जो कुछ भी लाना है। अपनी आवश्यकता के अनुसार तथा अपने आर्थिक साधनों में रहते हुए लाना है। फिर पड़ौसी के घर किसी वस्तु को आता देख कर कष्ट नहीं होना चाहिए किन्तु होता है क्योंकि मानव में दूसरे के प्रति ईर्ष्या है, द्वेष है, स्पर्द्धा है। यह भावना ही उसे आगे नहीं बढ़ने देती।

मानव सुखी रहना चाहता है। हमारे धर्म ग्रंथ वेद ने सुखी रहने के लिए अनेक उपाय बताए हैं। इन ग्रंथों के ही आधार पर हमारे ऋषियों ने, मनीषियों ने सुखी जीवन के अनेक मार्ग बताए हैं। परमपिता परमात्मा ने मानव जीवन के सुख के लिए, मानवमात्र के कल्याण के लिए चार वेद हमें दिए हैं। इन चार वेदों में जीवन को कल्याणकारी बनाने के लिए, सुखी बनाने के लिए अनेक उपाय बताए हैं तथा कहा है कि हे मानव! यदि तुझे सुख की अभिलाषा है तो वेद में बताए इस मार्ग पर चल। यजुर्वेद का प्रथम अध्याय तो पूरी तरह से सुख के लिए मानव मात्र को प्रेरणा दे रहा है। इसके प्रथम सूक्त के कुल सैंतीस मंत्र सुखों का मार्ग बता रहे हैं।

यजुर्वेद के प्रथम अध्याय का आरम्भ ही इस बात से करते हैं कि हे मानव! यदि तू सुखी रहना चाहता है तो प्रातः शुभ महूर्त में उठ। अब प्रश्न उठता है कि यह शुभ मुहूर्त क्या होता है ? आओ पहले हम इस शब्द पर ही विचार करें।

शुभ मुहूर्त क्या है? कहने को तो हम कह सकते हैं कि जब परमपिता परमात्मा ने इस सृष्टि की रचना की और इस की पूर्ति पर जब इस धरती के लिए सूर्य की प्रथम रश्मि, प्रथम किरण इस धरती की ओर बढ़ी, उसे हम शुभ मुहूर्त कह सकते हैं। यदि वह किरण ही शुभ मुहूर्त है तो उस समय तो हम थे नहीं। इस कारण हम शुभ मुहूर्त में कैसे उठ सकते हैं? इसका उतर हमारे ऋषियों ने देते हुए कहा है कि जो उस काल में सूर्य की प्रथम रश्मि इस धरती की ओर जिस समय बढ़ी थी, उस प्रकार ही प्रति दिन सूर्य की प्रथम रश्मि धरती की और बढ़ती है। बस इस समय को ही ब्रह्म मुहूर्त जानो।

इस सब से जो बात स्पष्ट होती है। वह यह है कि प्रातः काल की मंगल वेला में जब आकाश के तारे सिमटते जा रहे हों, हल्का सा अंधकार आकाश में सिमटा हुआ हो किन्तु सूर्य की किरण अब तक न निकली हो ऐसे काल को ही शुभ मुहूर्त कहते हैं। यह समय शुद्ध वायु से भरपूर वातावरण होता है। इस समय जो लोग अपने शयन से निकल कर सैर को जाते हैं। योग, व्यायाम, प्राणायाम करते हैं। उन्हें कभी कोई रोग नहीं होता। रोग न होने से उनकी अल्पायु में मृत्यु नहीं होती। वह दीर्घ जीवी होते हैं तथा सुख से संपन्न होते हैं। इसलिए ही यजुर्वेद के इस प्रथम अध्याय के प्रथम सूक्त के प्रथम मंत्र में ही यह उपदेश किया गया है कि हम प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में उठकर भ्रमण को जावें।

इस उपदेश को आगे बढ़ाते हुए कहा गया है कि यह एक धर्म का कार्य है तथा धर्म के कार्यों को कभी अस्वस्थ होने पर कभी कष्ट में होने पर भी नहीं छोड़ना चाहिए। यह हमारी आत्मा का युक्त आहार है। इसके साथ ही साथ ईश्वर के लिए स्तुति, उसकी प्रार्थना तथा उसकी उपासना भी की जावे तो सोने पर सुहागा वाली बात हो जाती है। इसके साथ ही हमारे ऋषियों ने हमारे सुख के लिए छः मंत्र दिए हैं तथा उपदेश किया है कि शुभ मुहूर्त में प्रातः उठते ही अपनी शैय्या पर बैठ कर प्रभु को स्मरण करते हुए इन मंत्रों का उच्चारण करते हुए अपने कार्य का अपने व्यवसाय का चिंतन करें। इन छः मंत्रों में से प्रथम मंत्र इस प्रकार है:-

प्रातरग्नि प्रातरिन्द्रम् हवामहे प्रातरमित्रावरुणा प्रातश्विना।
प्रातर्भगम् पूषणम् ब्राह्मणस्पतिं प्रातः सोममुत रुद्रम् हुवेम।।
ऋग्वेद ७.५१.१

प्रातःकाल की अमृत वेला में बोले जाने वाले इस मंत्र में दस बिंदुओं पर प्रकाश डालते हुए कहा गया है कि:

१. प्रातरग्नि :-इस में दो बातें आई हैं। प्रथम प्रातः तथा द्वितीय अग्नि। प्रातः का अर्थ है प्र + अतः अर्थात् प्रारम्भ करता हूँ। प्रातः काल का समय वह समय होता है। जहाँ से दिन का आरम्भ होता है। इसलिए परमपिता परमात्मा यहाँ कह रहे हैं कि हे जीव तेरे कर्म करने के लिए मैं तुझे प्रकाश देता हूँ। तेरे लिए दिन का आरम्भ करता हूँ। मानव भी इस मंत्र का गायन करते हुए कहता है कि मैं अपने दैनिक कार्यों का इस काल में आरंभ करता हूँ।

मंत्र के इस शब्द के दूसरे भाग में अग्नि शब्द का प्रयोग किया गया है। इस अग्नि के माध्यम् से मंत्र उपदेश करता है कि अंधकार को चीरते हुए प्रकाश का आगमन हुआ है। प्रातःकाल हुआ है। प्रभु की अपार दया से यह सुंदर दृश्य उपस्थित हुआ है। सब ओर पक्षी चहचहा रहे हैं। मुर्गे बांग दे रहे हैं। हिरण कुलाचीयाँ भर रहे हैं। खरगोश आनंद से इधर उधर भाग रहे हैं। इस संसार के सब जीव आनंद से विभोर हो रहे हैं। फिर मानव क्यों न आनंदित हो, वह भी आनंद से भरा हुआ है। इस काल में सदगृहस्थ कहता है कि यह विश्व एक परिवार है तथा इस परिवार का अंग होने के नाते हम सब सदस्य अपने अपने ब्राह्मणत्व, क्षत्रीयत्व, आदि अपने स्वयंवृत वर्ण के धर्म स्वरूप अपने व्रत को पुकारते हैं क्योंकि वह वृतधर्म ही हमें अग्नि रूप परमात्मा को मिलाने वाला दूत है। कहा भी है "अग्नि दूत वृणीमहे"।

अग्नि क्या है? जो आगे ले जावे उसे अग्नि कहते हैं। परमपिता परमात्मा हमारे अनन्य सहयोगी हैं। वह हमें सदा उन्नति की ओर ही ले जाने वाले हैं। इसलिए मंत्र में परमात्मा को अग्नि मानकर उसकी स्तुति हम कर रहे हैं। जब हम मंत्र को अपने व्यवसाय के साथ जोड़ते हुए इसे अपने व्यक्तिगत जीवन का भाग बनाते हैं तो हम कह सकते हैं कि हमारे दैनिक क्रिया कलाप को आगे बढ़ाने उन्नति की ओर ले जाने की जब हम प्रार्थना करते हैं तो हम अग्निदेव प्रभु से तो यह मांगते ही हैं कि हे प्रभु देव! आप मेरे व्यवसाय को उन्नत करिए। मेरे कार्य को आगे बढ़ाएं अतः इस में सफलता प्रदान कीजिए। इसके साथ हम स्वयम् भी अग्नि बन कर अपने व्यवसाय को, अपने कार्य को आगे बढ़ाने का यत्न करते हैं क्योंकि पुरुषार्थ ही सब सफलताओं का मूल होता है। इसलिए हम खूब मेहनत से, पुरुषार्थ से अग्नि बनने का प्रयास करते हैं।

२. प्रातरिन्द्रम् हवामहे: अग्नि को पुकारने के पश्चात् हम प्रातःकाल की इस मंगल वेला में इंद्र को पुकारते हैं क्योंकि हम ने इससे पूर्व अग्नि का स्मरण किया था। अग्नि को अंगीकार किया था। अग्नि ने हमें सफलता के मार्ग पर आगे भेजा अथवा हमारे व्यवसाय का मार्ग दर्शन किया। हमें अपने कार्य को संपन्न करने का प्रशिक्षण मिला। अब हम चाहते हैं कि हम अपने कार्य में पारंगत हो जावें।

(क्रमशः)

पृष्ठ 2 का शेष-घटाटोप अज्ञानान्धकार...

धारणाओं की उपासना रूपी अंधी गली में धकेल दिया।

वेद रूपी सूर्य को दिखाने वाले महर्षि दयानन्द जी महाराज: सृष्टि में उत्थान-पतन, प्रकाश-अंधकार, उन्नति-अवनति के क्रम चलते रहते हैं। शताब्दियों के अज्ञानान्धकार से त्रस्त और वर्तमानकाल में दीपकों के धुएं से विरक्त होकर आत्माएं (मनुष्य) उन्मत्तवश होकर आत्मिक सूर्य के दर्शन के लिये बुद्धि रूपी आँख उठा उठाकर देखती थी। उनके भीतर से आवाज आती थी कि जिसका आरम्भ है उसका अन्त अवश्य होगा और सान्त कर्मों का फल असीमित नहीं हो सकता। जगत् पिता के नियमानुसार जीवों के दु:खों की रात्रि घटने का समय आ रहा था और अविद्यान्धकार के बादल को हटाकर वेद सूर्य के दर्शन कराने वाला महर्षि संसार में उत्पन्न होने वाला था। भूगोल की पुरानी राजधानी आर्यावर्त ने महाभारत के युद्ध के कलंक को धोकर जगद्गुरु की पदवी पुन: प्राप्त करनी थी और संसार के सच्चे इतिहास ने पांच हजार वर्ष के दीपकों की एकाकी रेखा को उड़ाकर महर्षि जैमिनी के पश्चात् फिर ऋषि और महर्षि के नाम लिखने से ऋषि परम्परा और वेद ज्ञान की पुनर्स्थापना करनी थी। धन्य हैं वे लोग जिन्होंने आर्यावर्त के भीतर वेद सूर्य को दर्शाने वाले महर्षि स्वामी दयानन्द के दर्शन किये।

संसार में वेद ज्ञान एवं आर्ष ग्रन्थों की वैचारिक सम्पदा की जिस मानवोपयोगी विचारधारा के प्रचार प्रसार के लिये स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने अपने गुरु स्वामी विरजानन्द जी महाराज को वचन दिया था, उसका उन्होंने निर्वाह किया और वह भी निर्भीक होकर बड़े अद्वितीय ढंग से किया। ऋषिवर ने वेद विद्या का पुनरुद्धार किया, स्त्रियों एवं शूद्रों सहित सभी को वेद सहित विद्याध्ययन का अधिकार दिया, पाखण्डों का अनवरत खण्डन किया, भ्रान्तियों तथा अंधविश्वासों का निवारण किया, संस्कृत के पठन पाठन एवं गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली के लिए प्रेरित किया, धर्म एवं ईश्वर का सत्य स्वरूप संसार के सम्मुख प्रस्तुत किया और व्याकरण, महाभाष्य और निरुक्त के आधार पर वेद भाष्य की यौगिक प्रणाली की कुंजी हमें प्रदान की। महर्षि द्वारा किये गये कार्य को देखकर विदेशी विद्वान् भी हतप्रभ थे। अपने ब्रह्मचर्य, योगविद्या, आत्मिक बल, महान वैदुष्य के बल पर स्वामी जी इतना असाधारण कार्य कर सके एवं महर्षि जैमिनि के साथ रुकी हुई ऋषि परम्परा को पुन: आगे बढ़ाने वाले बने।

चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज, जालन्धर छावनी का वार्षिक चुनाव 4-2-2018 को चुनाव अधिकारी श्री गणपत राय सोनी जी की देखरेख में हुआ। इसमें श्री चन्द्र गुप्ता जी को पिछली वर्ष की भांति सर्वसम्मति से आर्य समाज का प्रधान निर्वाचित किया गया एवं कार्यकारिणी एवं अन्तरंग सदस्य बनाने का उन्हें पूर्ण अधिकार दिया गया। अपने अधिकारों का प्रयोग करते हुए निम्नलिखित कार्यकारिणी तथा अन्तरंग सभा की घोषणा की।

प्रधान श्री चन्द्र गुप्ता वरिष्ठ उपप्रधान श्री गणपत राय सोनी उपप्रधान श्री अशोक जावेद, श्री राकेश आर्य, श्री मनीष महाजन, मंत्री श्री जवाहर महाजन, कोषाध्यक्ष श्री चन्द्र शेखर अग्रवाल, सह कोषाध्यक्ष श्री बलविन्द्र कपूर, पुस्तकाध्यक्ष श्री रघुनाथ ठाकुर, आर्यवीर दल अधिष्ठाता श्री सुरेन्द्र मोहन लाला, आर्य युवा प्रमुख श्री अशोक शर्मा, प्रचार प्रमुख श्री जतेन्द्र कुमार सेठ, लेखा निरीक्षक श्री अशोक वर्मा, कानूनी सलाहकार अन्तरंग सभा श्री संजीव गुप्ता, श्री कृष्ण लाल गुप्ता, श्री धमेन्द्र अग्रवाल, श्री सुरज प्रकाश अग्रवाल, श्री दीपक जैन, श्री संदीप सेठी, श्री अयोध्या प्रसाद, जवाहर लाल आदि।

पृष्ठ 5 का शेष-ओजोन मण्डल और...

15000 गैर सरकारी संगठन पृथ्वी की सुरक्षा की चिन्ता पर विचार कर रहे हैं। इस सम्मेलन की महत्वपूर्ण उपलब्धि यह रही कि यहां पर विश्व पर्यावरण सुरक्षा तथा ओजोन परत पर खुलकर बहस हुई। सम्पूर्ण विश्व ने इसकी आवश्यकता को अनुभव किया। विश्व में सी. एफ. सी. रसायनों के नियन्त्रण के लिए अन्तर्राष्ट्रीय सहमति और समझोते किये जा रहे हैं। आशा है कि ये सफल होंगे।

आर्य समाज लुधियाना रोड़ फिरोज़पुर छावनी में पूर्णमासी एवं वासन्ती नव सस्येष्टि यज्ञ (होलिकोत्सव) बड़ी धूमधाम से सम्पन्न

फाल्गुन शुक्ल पक्ष पूर्णिमा को आर्य समाज जी.टी. रोड़ फिरोज़पुर छावनी में विशेष यज्ञ के माध्यम से पूर्णमासी एवं होली (होलीकोत्सव) के उपलक्ष्य में कार्यक्रम श्रद्धा व उत्साहपूर्वक मनाया गया। पं. मनमोहन शास्त्री ने विशेष यज्ञ का आयोजन ब्रह्मा पद पर आसीन होकर सुसम्पन्न किया तथा अपने विचार प्रकट करते हुए पर्व के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि वैदिक परम्परा में आनन्द, उत्साह, ऊर्जा, परस्पर प्रेम पूर्ण व्यवहार एवं सत्संगपूर्वक पर्व मनाने का प्रावधान है जिससे राष्ट्र की एकता खुशहाली एवं सुदृढ़ता तथा अधिक एवं अच्छी तरह से प्रगति में सहायक बने।

इस अवसर पर दर्जनों सज्जनों एवं देवियों ने उत्साहपूर्वक उपस्थिति दर्ज कराई जिसमें यज्ञ के मुख्य यजमान श्रीमति स्वर्ण चावला एवं डॉ. सरोज सहगल के अतिरिक्त श्री विपन कुमार मित्तल, श्री सुभाष गोयल, श्री चन्द्रमोहन जोशी, श्री अनुराग गर्ग, श्री हरीश गुप्ता, श्री राजेश आहुजा (सपत्नीक) श्री संजय आर्य एवं श्री विनोद गोयल प्रमुख थे।

आर्य समाज के महामंत्री श्री मनोज आर्य ने दो नन्हें आर्य बालकों प्रिय कृष्ण, एवं प्रिय माधव गोयल को यज्ञ में समर्पण भावना से भाग लेने व मन्त्रोच्चारण करने से प्रसन्न होकर नगद धनराशि एवं उपहार देकर सम्मानित किया। मंत्री जी ने सभी आगन्तुकों का हार्दिक धन्यवाद करते हुए आर्य समाज की गतिविधियों का उल्लेख किया एवं पर्व की शुभकामनाएं प्रदान की। तदुपरान्त शान्ति पाठ एवं जयघोषपूर्वक सत्संग का समापन हुआ। अन्त में सभी के लिए सुन्दर जलपान की व्यवस्था की गई।

-मनोज आर्य महामन्त्री

गुरुकुल हरिपुर, जुनानी का अष्टम वार्षिक महोत्सव सम्पन्न

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से सहृदयी दानदाता महानुभावों के सहयोग व गुरुकुल हितैषी दिव्यात्माओं के परोक्ष-प्रत्यक्ष उपस्थिति में गुरुकुल हरिपुर, जुनानी जि. नुआपड़ा ओड़िशा का त्रिदिवसीय वार्षिक महोत्सव 27, 28, 29 जनवरी 2018 को अनेक प्रेरक कार्यक्रमों के साथ गुरुकुल के संचालक डॉ. सुदर्शन देव आचार्य जी के सान्निध्य में गुरुकुल के आचार्य, उपाचार्य एवं कर्मठ कार्यकर्ताओं के पुरुषार्थ से निर्विघ्न सम्पन्न हुआ।

गुरुकुल के संरक्षक लेखवीर श्री खुशहालचन्द्र जी आर्य कोलकाता एवं श्री बसन्त कुमार पण्डा राज्य भाजपा प्रदेश अध्यक्ष के शुभकरकमलों से ओ३म् ध्वजा उत्तोलन के साथ त्रिदिवसीय महोत्सव का शुभारम्भ हुआ।

महोत्सवीय अवसर पर गुरुकुल में नवनिर्मित भवनों एवं चारदीवारी का लोकार्पण, लगभग सौ साधु-सन्तों का कम्बल एवं नगद राशि से सम्मान, विधवा, दिव्यांग, अनाथों को साड़ी, शॉल एवं कम्बल वितरण, तीन आदर्श गृहस्थी श्री पुरुषोत्तम आर्य, श्री नेहरु एवं श्री रत्नानन्द जी वानप्रस्थ दीक्षा से दीक्षित एवं श्री धनन्जय बारला नैष्ठिक दीक्षा से दीक्षित, पूज्य विद्वानों के द्वारा राष्ट्रोन्नति एवं आध्यात्मिक विषयक प्रवचन, गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के द्वारा बौद्धिक एवं शारीरिक प्रतिभा प्रदर्शन जिसमें 23 ब्रह्मचारी अष्टाध्यायी, धातुपाठ, लिंगानुशा,न उणादिकोश, पारिभाषिक, गणपाठ, निघण्टु, मीमांसा अतिरिक्त पांच दर्शन, छन्द: शास्त्र, काव्यालंकार, वर्णोच्चारण शिक्षा, आर्योद्देश्य रत्नमाला इन ऋषिकृत ग्रन्थों को आद्योपान्त सुनाये तथा नाटिका, गीतिका, नाटय गीतिका, कवाली एवं विविध शिक्षाप्रद सांस्कृतिक कार्यक्रम ब्रह्मचारियों के द्वारा प्रदर्शन किया गया।

अष्टम वार्षिक महोत्सव की सबसे बड़ी उपलब्धि छ: आदर्श परिवार दैनिक अग्निहोत्र करने का संकल्प लिये एवं ब्रह्मचारियों के द्वारा चाय पीने से हानि नाटय गीतिका प्रस्तुति से प्रभावित होकर अनेक सज्जन चाय एवं मादक पेय पदार्थ सेवन नहीं करने का व्रत लेकर यज्ञोपवीत धारण किये।

गुरुकुल के कुलपिता श्री सुरेश चुघ दिल्ली के संयोजकत्व में तीनों दिन छात्र-छात्राओं का गीता श्लोक, वेद मन्त्रोच्चारण प्रतियोगिता, संगीत एवं भाषण प्रतियोगिता, मौखिक सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

महोत्सव में पधारे ओड़िशा, छ. ग. झारखण्ड, म. प्र. आ. प्र. दिल्ली, कोलकाता आदि प्रदेशों के सहस्राधिक श्रद्धालु महानुभावों को आशीर्वचन एवं मागदर्शन हेतु स्वामी शान्तानन्द सरस्वती, गुजरात, स्वामी मुक्तानन्द परिव्राजक, अजमेर, स्वामी आत्मानन्द सरस्वती, स्वामी स्वतन्त्रानन्द सरस्वती, ओड़िशा, आचार्य आनन्द पुरुषार्थी होशंगाबाद, पं. नन्दकिशोर आर्य भजनोपदेशक रायपुर उपस्थित थे।

लुधियाना में विशाल भजन संध्या का आयोजन

आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना में ऋषि बोध उत्सव पर विशाल भजन संध्या का आयोजन किया गया जिसमें कई भजनोपदेशकों ने भाग लिया। मंच पर हरियाणा से प्रसिद्ध भजनोपदेशिका अंजलि आर्य जी भजन प्रस्तुत करते हुये जबकि भजनों का आनन्द लेती हुई बहनें एवं आर्य भाई।

आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना में ऋषि बोध उत्सव पर विशाल भजन संध्या का आयोजन किया गया। जिसमें विशेष तौर पर आर्य समाज समराला के भजनोपदेशक पंडित राजेन्द्र व्रत शास्त्री जी और हरयाणा से प्रसिद्ध भजनोपदेशिका अंजलि आर्य जी पधारे। भजन संध्या से पहले आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार (दाल बाजार) के पुरोहित आचार्य अरविन्द शास्त्री जी ने गायत्री महायज्ञ को सम्पन्न करवाया। उसके बाद भजनोपदेशक पंडित राजेन्द्रव्रत जी शास्त्री जी ने भजनों से सबका मन मोह लिया। उसके बाद विशेष रूप हरयाणा से पधारे अंजलि आर्य जी ने ऋषि महिमा का गान सुन्दर सुन्दर भजन और ऋषि दयानंद जी की जीवनी की घटनाओं को उजागर कर सबको झँझोर के रख दिया। सुन्दर-सुन्दर भजनों से पूरा पंडाल मधुर संगीत में डूबा हुआ था और एक भी आर्य टस से मस नहीं हुआ। सभी आर्य जन भजना सुनकर भाव विभोर हुये। अंत में ऋषि लंगर का प्रबंध किया गया।

मंच संचालन आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार (दाल बाजार) के महामंत्री आर्य सुरेन्द्र टण्डन जी कर रहे थे। विभिन्न आर्य समाज से पधारे आर्य समाज मॉडल टाऊन के मंत्री कैप्टन स्याल जी, जगजीवन बस्सी जी, आर्य समाज दुगरी के संचालक श्रवण बत्रा जी, आर्य समाज जवाहर नगर के प्रधान और जिला सभा के मंत्री डॉक्टर विजय सरीन जी, आर्य समाज फोक्ल पॉइंट के मंत्री, आर्य समाज फील्ड गंज से मंत्री हर्ष आर्य जी, कोषाध्यक्ष रमेश सूद जी, पुरोहित सभा के प्रधान आचार्य बालकिशन शास्त्री जी, मंत्री योगराज शास्त्री जी, स्त्री आर्य समाज मॉडल टाऊन से डॉ. सुमन जी राखी जी, आर्य समाज किदवई नगर आर्य समाज, बीआरएस नगर, आर्य समाज पार्क लेन, आर्य समाज दुगरी से पधारे आर्यजन, आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार (दाल बाजार) के अधिकारीगण संजीव चड्ढा जी, सुभाष अबरोल जी, रमाकांत महाजन जी, संत कुमार जी, सुरेन्द्र शास्त्री जी, प्रभा सूद जी, सुलक्षणा माता जी, वेद प्रिय चावला जी, ओम प्रिय चावला जी अशोक वैध जी, अजय मोंगा जी, अनिल आर्य जी, आर्य वीर दल से, मोहित महाजन, सिद्धान्त अबरोल, सचिन टण्डन, काका, अनमोल के साथ और भी आर्यजन जिनका मैं नाम नहीं ले सका। अंत में आर्य समाज दाल बाजार के प्रधान सतपाल नारंग जी ने सभी पधारे हुये आर्य जनों, विभिन्न आर्य समाजों से पधारे हुये अधिकारी गण एवं सदस्यों का धन्यवाद किया। इस भजन संध्या को लेकर भारी उत्साह था।

आर्य सुरेन्द्र टंडन
महामंत्री आर्य समाज

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस ऋषि बोधोत्सव एवं फाल्गुन संक्राति का आयोजन

दिनांक 11-02-2018 को महर्षि दयानन्द मठ (वेद मन्दिर) ढन्न मुहल्ला जालन्धर में महर्षि दयानन्द जी के 194वें जन्म दिवस एवं ऋषिबोधोत्सव के पावन अवसर पर सुरेश शास्त्री जी (आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के ब्रह्मत्व में पवित्र हवन यज्ञ का आयोजन किया गया। जिसमें पवित्र हवन कुण्ड के चारों तरफ युवा यजमान बने श्री प्रदीप भण्डारी जी (दोआबा कालेज) अपने सुपुत्र ध्रुव भण्डारी, आदित्य प्रेमी पत्नी साक्षी प्रेमी सहित नन्दिता विज, सीमा अनमोल सहित एवं राजु पत्नी गीता सहित यजमान बने। युवाओं के साथ श्री निवास बंसल धर्म पत्नी श्रीमति संतोष बंसल व श्री मदन लाल जी कालरा धर्म पत्नी श्रीमति आशा रानी सहित सभी संगत के पवित्र हवन में वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ आहुतियाँ डाली। यज्ञ ब्रह्मा श्री सुरेश शास्त्री जी ने बहुत ही अनुशासित ढंग से सभी संगत को आहुतियों डालने का अवसर प्रदान किया। यज्ञोपरांत यज्ञ प्रार्थना हुई एवं विश्व शांति के लिए परम पिता परमात्मा से प्रार्थना की गई। श्रीमति सीमा अनमोल एवं स्वर्गीय श्री यशपाल आर्य जी पौत्र-पौत्रियों ने भजन एवं संगठन सूक्त कण्ठस्थ सुनाकर सभी का मन मोह लिया। श्रीमति मधु शुक्ला ने भी भजन एवं संस्कृत श्लोक का अनुवाद कण्ठस्थ सुनाया। मंत्री राजिन्द्र देव विज ने युवा शक्ति का आर्य समाज में आने के लिए एक स्वयं लिखित कविता ''आर्य समाज ही क्यों'' में आर्य समाज की विचारधारा एवं आर्य समाज की विशेषताओं के साथ आर्य समाज द्वारा किये गये तथा आर्य समाज में किये जा रहे कार्यों के बारे में बताया तथा सभी से निवेदन किया कि जैसे हमें हमारे माता-पिता जी ने आर्य समाज में आने के लिए अंगुली पकड़कर प्रेरित किया वैसे ही हमारा भी कर्त्तव्य है कि हम भी अपने बच्चों, युवाओं को हवन यज्ञ में आने के प्रेरित करें। यज्ञ ब्रह्मा तथा समारोह के मुख्य प्रवक्ता श्री सुरेश शास्त्री जी ने महर्षि दयानन्द जी के जीवन पर तथा ऋषि बोधोत्सव पर बड़ी ही सरलता से प्रकाश डाला और बताया कि महर्षि दयानन्द जी एक युग द्रष्टां अध्यात्मिक और चिन्तनशील व्यक्तित्व के स्वामी थे। ऐसी विलक्षण विभूतियाँ कभी-कभी ही जन्म लेती हैं और समाज एवं विश्व का भला कर जाती हैं। महर्षि के बारे में उनका बखान करने में उन्होंने थोड़े से समय में उनकी विशेषताएँ बताकर युवाशक्ति को प्रेरित किया। अन्त में सभी यजमानों एवं संगत को आशीर्वाद दिया एवं सब के सुखों की कामना की। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री कुन्दन लाल जी अग्रवाल आदरणीय प्रधान जी ने की। बाद में सभी ने ऋषि लंगर साथ में मिलकर किया। कार्यक्रम बहुत ही हर्षोल्लास एवं श्रद्धापूर्वक सम्पन्न हुआ। दिनांक 12-02-2018 को श्री सुरेश शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में फाल्गुन संक्राति का हवन यज्ञ किया गया। वर्षा के बावजूद भी यजमानों ने पहुँचकर पवित्र हवनकुण्ड में आहुतियाँ डाली। श्री सुरेश शास्त्री जी ने फाल्गुन संक्राति के महत्व को सरलतापूर्वक सभी को समझाया। श्रीमति सीमा अनमोल जी ने प्रभु भक्ति का भजन सुनाकर सभी संगत को मंत्रमुग्ध कर दिया। श्री सुरेश शास्त्री जी ने सभी को अशीर्वाद दिया। शान्ति पाठ एवं जलपान के साथ कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। दोनों आयोजन पर श्री कुन्दन लाल जी अग्रवाल, श्री रवि मितल, श्रीमति सुदेश मितल, श्री सत्यशरण जिन्दल, श्रीमति किरण जिन्दल, श्री प्रकाश चन्द्र सुनेजा, श्रीमति प्रभा सुनेजा, राजिन्द्र देव विज, श्रीमति प्रभाविज, श्री राम कृष्ण अरोड़ा, श्री सोहन लाल सेठ, श्री रमेश कालड़ा, चौणराम कुमार, श्री अरूण कोहली, राम भवन शुक्ला, श्री विनित आर्य परिवार सहित सभी संगत ने शिरकत की।

-कुन्दन लाल अग्रवाल (प्रधान)

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। **E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org**
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।